

वैज्ञानिक मत्स्यपालन से समृद्धि

एच.के. डे, एस.एस. रथ, सी.के. मिश्रा, एस.एन. सेठी, यू.एल. मोहंती, एस.के. बेहेरा और **एस. सौरभ**

"श्री अरक्षित पोई, राइतला गांव के एक मत्स्य पालक हैं, जिन्होंने वर्ष 2017 में 0.1 हैक्टर तालाब से मछली पालन शुरू किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केन्द्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुबनेश्वर से वैज्ञानिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, इन्होंने मछली पालन की उन्नत तकनीकों को अपनाया, जिससे उत्पादन और आय दोनों में भारी वृद्धि हुई। वर्ष 2024 में, उन्हें राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस पर इनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इनकी सफलता नवाचार, संघर्ष और सामुदायिक सशक्तिकरण का एक प्रेरणादायक उदाहरण है।"

ढेंकानाल, ओडिशा में जल संसाधनों की प्रचुरता के कारण मत्स्य पालन स्थानीय निवासियों के लिए एक प्रमुख आजीविका स्रोत बन गया है। इन्हीं में से एक हैं, राइतला गांव के श्री अरक्षित पोई, जो 53 वर्ष के हैं। ये इस क्षेत्र के एक प्रगतिशील और उत्साही मत्स्य पालक हैं। इनकी यात्रा संघर्ष, नवाचार और समुदाय पर सकारात्मक प्रभाव की एक प्रेरणादायक कहानी है, जिसमें इन्होंने इस व्यवसाय में सफलता पाने के लिए कई कठिनाइयों का सामना किया और नये उपायों को अपनाया।

भाकृअनुप-केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान, भुबनेश्वर-751002, (ओडिशा)

वर्ष 2017 में मत्स्य पालन की शुरुआत करते समय, श्री पोई ने कई चुनौतियों का सामना किया। इनके पास केवल 0.1 हैक्टर तालाब और सीमित संसाधन थे। इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को ऊपर उठाने की दृढ़ इच्छाशक्ति सफलता की प्रेरणा थी। इनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि सामान्य केवल मैट्रिक तक थी, लेकिन दृढ़ संकल्प और मेहनत के बल पर इन्होंने सफलता की इच्छा प्रकट की। वर्ष 2021 में, श्री पोई ने वैज्ञानिक तरीकों से मत्स्यपालन की प्रथाओं को अपनाते हुए अपनी यात्रा के महत्वपूर्ण चरण में प्रवेश किया।

उन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय मीठाजल जीवपालन अनुसंधान संस्थान (भाकृअनुप-सीफा) और भारत सरकार के विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के तहत परियोजना से समर्थन प्राप्त हुआ। इसके तहत मत्स्य पालकों को मीठापानी जलकृषि पर व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण ने श्री अरक्षित पोई को मत्स्य अंगुलिका उत्पादन प्रौद्योगिकी और मछली पालन में महत्वपूर्ण ज्ञान और कौशल प्रदान किया। सीफा के मार्गदर्शन में, इन्होंने मछलियों का चयन, पोषण और रोग प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं में विशेषज्ञता प्राप्त की।

सीफा का समर्थन इनके विकास में महत्वपूर्ण रहा, जिसमें इन्हें मछली के बीज, चूना और आहार जैसी आवश्यक सामग्री प्राप्त हुई। इससे मछली पालन प्रथाओं में सुधार हुआ। वर्तमान में, ये 0.9 हैक्टर क्षेत्र में 8 तालाबों में कार्प पालन कर रहे हैं, जिनमें से 6 तालाबों (0.1 हैक्टर) में मछली अंगुलिका



उन्नत तकनीक द्वारा मत्स्य पालन

उत्पादन किया जा रहा है। इन्होंने कार्प पालन के लिए 2 तालाबों को पट्टे पर लिया है।

वैज्ञानिक तकनीक को अपनाने से पहले, श्री आरक्षित की कुल उत्पादन क्षमता लगभग 3.7 क्विंटल थी। हालांकि, सीफा की वैज्ञानिक कार्प पालन प्रौद्योगिकी के साथ, उनका उत्पादन तीन वर्षों में 14 क्विंटल तक बढ़ गया। उनकी शुद्ध आय भी वर्ष 2020-21 में 35,000 रुपये से बढ़कर वर्ष 2023-24 में 2,80,000 रुपये हो गई। इस अवधि में उनकी उत्पादन क्षमता 3.7 क्विंटल/हैक्टर से बढ़कर 17.5 क्विंटल/हैक्टर हो गई। बीज पालन में भी उन्होंने उत्कृष्ट परिणाम हासिल किए, जिसमें 3 महीने में 80-90 मि.मी. के अंगुलिका प्राप्त हुए, जिनकी उत्तरजीविता दर 55-60 प्रतिशत है जिसमे से ये कुछ स्थानीय बिक्री के लिए, कुछ आहार के लिए और बाकी अगले चरण में उत्पादन के लिए उपयोग करते हैं।



प्रशिक्षण से उत्पादन में सुधार

श्री पोई की उपलब्धियां असाधारण एवं अनदेखी हैं। वर्ष 2024 में राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस पर, भाकृअनुप-सीफा ने वैज्ञानिक मत्स्य पालन में इनके उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया। उन्नत कृषि तकनीकों को अपनाने और लागू करने की इनकी क्षमता ने उन्हें प्रगतिशील मत्स्य किसान के रूप में पहचान दिलवाई। अपनी व्यक्तिगत सफलता के अलावा, इन्होंने सामुदायिक गतिविधियों में सक्रिय भाग लिया, अपने ज्ञान और अनुभवों को साथी किसानों के साथ साझा किया, जिससे सामूहिक विकास और सुधार की भावना को बढ़ावा मिला।

श्री अरक्षित की सफलता शिक्षा और प्रेरणा का प्रतीक है, जो मछली पालन में नवाचारों को अपनाने की महत्वपूर्णता को दर्शाती है। इनकी यात्रा सामाजिक-आर्थिक सुधारों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जो वैज्ञानिक तकनीकों के उपयोग से संभव हुई। आज, श्री पोई अन्य मत्स्य पालकों को नवाचारों को अपनाने और मछली पालन में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। इनकी सफलता सामुदायिक सशक्तिकरण और सतत विकास की दिशा में एक प्रेरणादायक कदम है



स्वस्थ मत्स्य उत्पादन

निवेदन

लेखक बंधु *खेती* पत्रिका के लिए अपने लेख और संबंधित फोटो, कवरिंग लैटर के साथ सिर्फ निम्न पोर्टल पर ही अपने मोबाइल नम्बर के साथ भेजें। ध्यान रखें कि फोटो जेपीजे फॉर्मेट में और उच्च रेज्योल्यूशन की हों। लेख में अधिकतम 1200 शब्दों की संख्या रखने का प्रयास करें। इसके अतिरिक्त सुझाव और प्रतिक्रियाएं भी भेज सकते हैं।

हमारा पोर्टल है :
epatrika.icar.org.in

–संपादक